एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 05, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2025)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

शुष्क राजस्थान में मोठ की फसल उत्पादन तकनीक

*आदित्य नामा एवं मनीषा राठौड़
आ.एन.टी. कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, कपासन (MPUAT, उदयपुर), राजस्थान
*संवादी लेखक का ईमेल पता: aadityanama2@gmail.com

वानस्पतिक नाम – *विग्ना एकोटिनीफोलिया*

कुल – लेग्यूमिनोसी (फैबेसी)

प्रोटीन – 18–22%

राजस्थान में मोठ उत्पादन में प्रमुख जिला – बीकानेर

परिचय

राजस्थान राज्य का अधिकाँश भाग शुष्क एवं अर्ध शुष्क जलवायु क्षेत्र में स्थित है जहाँ वर्षा कम, अनियमित तथा तापमान अधिक रहता है। ऐसी विषम परिस्थितियों में परम्परागत फसलों की खेती कठिन हो जाती है। इन क्षेत्रों के लिए मोठ एक महत्वपूर्ण दलहनी फसल है जो अत्यधिक सूखा सहन करने की क्षमता रखती है। मोठ कम वर्षा, हल्की रेतीली मिट्टी तथा सीमित संसाधनों में भी सफलतापूर्वक उगाई जा सकती है। यह फसल न केवल प्रोटीन का अच्छा स्रोत है बल्कि वायुमण्डलीय नाइट्रोजन को स्थिर कर मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में भी सहायक होती है। शुष्क राजस्थान में किसानों की आजीविका एवं कृषि की स्थिरता बनाए रखने में मोठ की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

उन्नत किस्में

RMO-40: पीत शिरा मोजेक के प्रति प्रतिरोधी, सूखा सहन करने की क्षमता

RMO-257: पीत शिरा एवं थ्रिप्स के प्रति सहनशील

काजरी मोठ-2: अधिक दाना एवं चारा (100–150 फलियाँ प्रति पौधा)

काजरी मोठ-3: दाने चमकदार व बड़े आकार वाले

भूमि एवं तैयारी

मोठ की खेती हल्की भूमियों में अच्छी होती है। मोठ के लिए बलुई दोमट एवं बलुई भूमि उत्तम होती है। भूमि में जल निकास की उचित व्यवस्था होनी चाहिए तथा मूंग की खेती के लिए दो बार ट्रैक्टर से जुताई कर पाटा लगा देना चाहिए।

बुवाई का समय

मोठ की बुवाई 15 जुलाई तक कर देनी चाहिए तथा शीघ्र पकने वाली किस्मों की बुवाई 30 जुलाई तक कर देनी चाहिए। इसमें पंक्तियों से पंक्तियों की दूरी 45 cm रखते हुए बुवाई करनी चाहिए।

बीजदर

शुद्ध फसल के लिए – 10–15 kg/ha.

मिश्रित खेती के लिए – 4–5 kg/ha.

चरी की खेती के लिए – 20–25 kg/ha.

खाद एवं उर्वरक

मोठ दलहनी फसल होने के कारण इसमें नाइट्रोजन की कम आवश्यकता होती है। एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिए 20 kg नाइट्रोजन व 40 kg फास्फोरस की आवश्यकता होती है। इसके लिए खेत की तैयारी के समय 2.5 टन गोबर या कम्पोस्ट की मात्रा भूमि में अच्छी प्रकार मिला देनी चाहिए। इसके उपरान्त बुवाई के समय 44 किलो डीएपी एवं 5 kg यूरिया भूमि में मिला देना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

बुवाई के 25–30 दिन तक खरपतवार फसल को अत्यधिक नुकसान पहुँचाते हैं इसके लिए बुवाई से एक-दो दिन पश्चात पेंडीमिथालिन की 0.75–1 kg सक्रिय तत्व की मात्रा को 400–600 लीटर पानी में घोलकर एक हेक्टेयर में छिड़काव करना उचित रहता है।

प्रमुख कीट एवं नियंत्रण

दीमक

यह कीट पौधों की जड़ को काटकर नुकसान पहुँचाती है जिससे पौधे सूख जाते हैं।

नियंत्रण :– अंतिम जुताई के समय क्लोरोपायरीफॉस / क्यूनालफॉस पाउडर को मिट्टी में मिलाएँ।

कातरा

यह कीट प्रारम्भिक अवस्था में पौधों की जमीन के पास से काट देता है।

नियंत्रण :– खेत को साफ रखें तथा अधिक प्रकोप होने पर मिथाइल पैराथियान पाउडर का उपयोग करें।

जैसिड (हरा फुदका)

यह पत्तियों का रस चूसकर पौधों को कमजोर करता है तथा इससे पत्तियाँ मुड़ने लगती हैं।

नियंत्रण :– मोनोक्रोटोफॉस या डायमिथोएट का पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

माहू, सफेद मक्खी, थ्रिप्स

इनके नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड या मेलाथियान का छिड़काव करें।

प्रमुख रोग एवं नियंत्रण

पीत शिरा मोजेक रोग :–इस रोग में पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं और पौधों की वृद्धि रुक जाती है।

नियंत्रण :– रोग फैलाने वाली सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड या मेलाथियान का छिड़काव करें।

पत्ती धब्बा रोग :–इस रोग में पत्तियों पर भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं।

नियंत्रण :– रोगग्रस्त पौधों को नष्ट करें तथा उचित फफूंदनाशक का छिड़काव करें।

कटाई, गहाई व भण्डारण

जब फलियाँ पक जाएँ और उनका रंग भूरा पड़ जाये तब कटाई करनी चाहिए। कटाई के उपरान्त फसल को ढेर लगाकर 3–5 दिन तक धूप में सुखाते हैं तथा इसके बाद गहाई की जाती है। गहाई के बाद दाने को धूप में लगभग 8–10% नमी होने तक सुखाते हैं। इसके बाद दाने का भण्डारण किया जाता है।

उपज

उन्नत विधि से खेती करने पर दाने के लिए बोई गई फसल से 6–8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर दाना प्राप्त होता है तथा हरे चारे के लिए बोई गई फसल से 12–25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर चारा प्राप्त होता है।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि मोठ शुष्क राजस्थान की परिस्थितियों के लिए अत्यन्त उपयुक्त दलहनी फसल है। यह कम वर्षा और सीमित संसाधनों में भी अच्छी उपज देने की क्षमता रखती है। अन्य फसलों की तुलना में मोठ कम लागत में अधिक सुरक्षित एवं सुनिश्चित उत्पादन देती है जिससे जोखिम कम रहता है। अतः शुष्क राजस्थान में किसानों को खरीफ मौसम में मोठकी खेती को अपनाना चाहिए ताकि कम लागत में स्थिर उपज एवं आय सुनिश्चित की जा सके।